❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा विभेर्न मरिष्यसि।।

अथर्व. 5/30/8

हे आत्मन्! डर मत, तू मरेगा नहीं।

O soul! be not araid ! you will not die.

वर्ष 40, अंक 49 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 2 अक्टूबर, 2017 से रविवार 8 अक्टूबर, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आयरलैण्ड और द. अमेरिका में महामारी दूर करने के लिए थी ''यज्ञ'' की परम्परा

आ दि सृष्टि से लेकर अब तक कोई समय ऐसा नहीं मिलता जब किसी-न-किसी रूप में हवन यज्ञ का प्रचार समस्त संसार में न रह चुका हो। हमारे वेद-शास्त्र, ब्राह्मण, उपनिषद्, गीता, रामायण, महाभारत आदि प्राचीन ग्रन्थ तो इसकी महिमा गाते थकते ही नहीं, परन्तु आधुनिक विद्वान् भी हमारे इस सिद्धान्त की पुष्टि करते हैं। प्रो. मैक्समूलर की पुस्तक 'फिजिकल रिलीजन' के पाठ से विदित होता है यवन

....विज्ञान ने उन्नति की और उपर्युक्त वस्तुओं को पृथक जलाकर विज्ञान वेत्ताओं ने परीक्षण किए और फ्रांस के विज्ञान वेत्ता प्रो. टिलबर्ट ने बताया कि खांड जलाने से हैजा, तपेदिक, चेचक आदि का विष भी शीघ्र नष्ट होता है। डॉ. टाटलिस्ट बताते हैं कि मुनक्का, किशमिशादि जलाने से टाईफाईड ज्वर के कीटाणु केवल आधे घण्टे में और दूसरे रोगों के कीटाणु दो घण्टे में समाप्त हो जाते हैं। फ्रांस के ही डॉ. हेफकिन ने सिद्ध किया कि घी जलाने से रोग कृमियों का नाश होता है।....

देश के तत्त्वेत्ता 'प्लूयकी' ने आग को वायु शोधक माना है। आग जलाने की रीतिगत शताब्दी तक स्कॉटलैण्ड में पाई जाती थी। आयरलैण्ड और दक्षिण अमेरिका में महामारी के लिए अग्नि जलाने की प्रथा यानी यज्ञ करने की प्रथा प्रचलित रह चुकी है। जापान और चीन में होम को घोम कहते हैं और मन्दिरों में धूप जलाते हैं। जर्मनी में लेवेंडर की बत्ती जलाई जाती है। ईरान के पारसी लोग हवन को आर्यों की तरह से उत्तमता से करते हैं। *– शेष पृष्ठ 5 एवं 7 पर*

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान गंगा प्रसाद जी बने मेघालय के राज्यपाल

आर्यसमाज की ओर से दी हार्दिक शुभकामनाएँ

'विक्रमी 2074 का दशहरा अर्थात दिनांक 30 सितम्बर, 2017 का दिन आर्यसमाज के इतिहास में पुन: स्वर्ण अक्षरों से लिखा जाएगा। जब महामहिम राष्ट्रपति द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के प्रधान श्री गंगा प्रसाद जी को मेघालय का महामहिम राज्यपाल नियुक्त किए जाने का समाचार सुना तो मन गद्-गद् हो गया।' ये विचार रविवार 1 अक्टूबर को आर्य केन्द्रीय सभा की बैठक में श्री गंगा प्रसाद जी का स्वागत करते हुए महाशय धर्मपाल जी ने व्यक्त किए।

दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने मेघालय राज्य के राज्यपाल बनाए जाने पर सभा एवं दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं प्रत्येक आर्यजन की ओर से बधाई दी। उन्होंने कहा कि सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन जीते हुए जिस प्रकार आपने आर्यत्व एवं वैदिक मर्यादाओं को अपने जीवन में स्थापित किया, वह हम सबके लिए प्रेरणादायक है। मैं आशा करता हूं यह प्रेरणा मेघालय राजभवन के प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी के जीवन में भी स्थानान्त्रित हो, और आप उनके हृदय में परमादरणीय स्थान प्राप्त करें।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी ने भी अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की।

मेघालय महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी को आशीर्वाद प्रदान करते महाशय धर्मपाल जी, सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, साथ में हैं श्री सुरेन्द्र रैली जी, श्री सतीश चड्ढा जी एवं श्री योगेश आर्य जी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमा में भाग लेने मांडले पहुंचे कार्यकर्ता एवं आर्यजन

ब्रह्मदेश की धरती बर्मा (म्यांमार)पर करेंगे वेद की ज्योति प्रज्ज्वलित : आगामी महासम्मेलन दिल्ली में होगा

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमा में भाग लेने के लिए राजस्थान, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, समेत सम्पूर्ण भारत से और विश्व के 32 देशों के प्रतिनिधि भाग लेंगे म्यांमा पहुंच रहे हैं। सम्मेलन में वैदिक धर्म, महर्षि दयानंद सरस्वती के बताए वेद मार्ग पर चलने पर विचार-विमर्श होगा और विश्व शांति के लिए मंथन होगा। सांस्कृतिक और धार्मिक रूप भारत से जुड़े इस देश में वैदिक धर्म प्रेमी स्वामी जी के सपने को पुनर्जीवित करने के लिए बड़े उत्साह और लग्न से म्यांमा पहुँच रहे हैं।

वेद-स्वाध्याय

मानव शरीर रूपी यज्ञशाला

सप्तऽऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्त रक्षन्ति सदमप्रमादम्।
सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागृतो अस्वपन्नजौसत्रसदौ च देवौ।।-यजुः. 34/55
ऋषिः कण्वः।। **देवता** - अध्यात्मं प्राणाः।। **छन्दः** भुरिग्जगती।।

शब्दार्थ - शरीरे सप्त ऋषयः प्रतिहिताः = शरीर में सात ऋषि स्थापित हैं **सप्त सदं अप्रमादं रक्षन्ति** = सार हैं जोकि इस सद (स्थन, यज्ञशाला) की प्रमाद-रहित होकर रक्षा करते रहते हैं। **स्वपतः सप्त आपः लोकं ईयुः** = सुषुप्तावस्था में ये सात ज्ञानप्रवाह अपने लोक में लीन हो जाते हैं, **तत्र च** = तो वहां भी **सत्रसदौ**= यज्ञ में बैठे रहने वाले **अस्वप्नजौ**= कभी न सोनेवाले **देवौ**= दो देव **जागृतः**= जागते रहते हैं।

विनय - यह शरीर भगवान ने तुझे यज्ञ करने के लिए दिया है। यह देव पवित्र यज्ञशाला है। इसमें बैठे हुए सात ऋषि भगवान् का यजन कर रहे हैं। आंख देख रही है, कान सुन रहा है, नासिका सूंघ रही है, त्वचा स्पर्श कर रही हैं, जिह्वा रस ले रही है, मन मनन कर रहा है और बुद्धि निश्चय कर रही है। ये सातों ऋषि शब्द, रूप, गन्ध, स्पर्श, रस का ज्ञान करते हुए, मनन और अवधारण करते हुए अपनी इन ज्ञान-क्रियाओं द्वारा भगवान् का यजन कर रहे हैं। ये ज्ञानशक्तियां हमारे अन्दर भगवद्यजन के लिए ही रखी गई हैं हमारी प्रत्येक ज्ञान-प्राप्ति भगवत्प्राप्ति के लक्ष्य से ही होनी चाहिए और इन सातों ज्ञानेन्द्रियों (बाह्य और अन्दर के करणों) के साथ एक-एक प्राणशक्ति भी काम कर रही है, जिन्हें सात शीर्ष प्राण करते हैं। ये सात प्राण इस 'सद्' की- इस यज्ञशाला की-रक्षा पूरी सावधानता के साथ, बिना प्रमाद किये कर रहे हैं। इस प्रकार इस यज्ञशाला में निरन्तर यह यज्ञ चल रहा है। हम हमेशा कुछ-न कुछ ज्ञान (अनुभव) करते रहते हैं-देखते, सुनते या मनन आदि करते रहते हैं। स्वप्नावस्था में भी यह देखना-सुनना बन्द नहीं होता। हां, सुषुप्ति-अवस्था में जब इन सात ऋषियों के 'आपः' (ज्ञानप्रवाह) सुषुप्ति के लोक मे लीन हो जाते हैं, हमें कुछ भी अनुभव नहीं हो रहा होता, तब क्या यह यज्ञ भङ्ग हो जाता है? नहीं, तब भी दो देव जागते हैं। ये दोनों देव कभी भी सोने वाले नहीं, इन्हें कभी नींद दबा नहीं सकती, अतः ये 'सत्रसदौ' तब भी यज्ञ में बैठे हुए जागते रहते हैं। ये हैं-(1) आत्म-चैत्न्य और (2) प्राण। इन सात ऋषियों को दर्शनशक्ति देनेवाला देव एक है और इन रक्षक प्राणों को प्राण-शक्ति देने वाले दूसरा है। ये दोनों देव-ज्ञानशक्ति और कर्मशक्ति के देव-तब भी जागते रहते हैं और ज्ञान तथा कर्म द्वारा चलने वाले इस यज्ञ की इन दोनों शक्तियों को निरन्तर कायम रखते हैं, बल्कि पुष्ट करते रहते हैं, जब तक जीवन है तब तक चलता रहता है।

परन्तु क्या हम इस शरीर-यज्ञशाला को यज्ञशाला की भांति पवित्र रखते हैं? कहीं यज्ञ करने वाले ये सात ऋषि ज्ञानक्रिया द्वारा भगवद्यजन करना छोड़कर अपने ऋषित्व से भ्रष्ट तो नहीं हो जाते?

साभार-वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

मानवता का पाठ पढ़ा रहे हैं हत्यारे?

.....भारत के न्यूज चैनलों पर बैठे रोहिंग्या मुसलमान खुद को असहाय बता रहे हैं। जबकि उनकी बर्बरता कम नहीं हो रही है। बौद्धों के अलावा वह हिन्दुओं को भी निशाने पर ले रहे हैं। आतंकी संगठनों से रोहिंग्या मुस्लिमों की मिलीभगत साफ-साफ नजर आ रही है। भारत के ये स्वघोषित उदारवादी लोग और कुपढ़, धर्मनिरपेक्ष लोग इन्हें भारत में बसाने के पक्ष में क्यों लगे हुए हैं? जो मरते-मरते भी अपने मजहब के विस्तार के लिए अमानवीय तरीके अपना रहे हो, जिस समुदाय के बारे में इंटेलिजेंस की रिपोर्ट में भी आतंकी संगठनों से मिले होने की बात कही गयी हो उसको भारत में शरण देने के लिए भारत के मीडिया और अन्य संस्थानों में बैठे लोग मुखर होकर सामने आ रहें हैं, भला क्यों?.....

वर्ष 1971 यूगांडा में ईदी अमीन ने राष्ट्रपति मिल्टन ओबोटे का तख्ता पलट दिया था। फिर उन्होंने यूगांडा में अपनी तानाशाही का दौर शुरु किया और इसके बाद उन्होंने एशियाई मूल के हजारों लोगों को जोकि इस्लाम से भिन्न मत रखते थे जिनमें भारत का एक बहुत बड़ा हिन्दू समुदाय भी था देश से निकाल दिया, उनकी संपत्ति जब्त कर ली और अपने दोस्तों में बाँट दी जब विश्व समुदाय ने इस घटना को उठाया तो समस्त मुस्लिम देशों ने एक स्वर में कहा था कि इस्लाम के बीच सिर्फ इस्लाम को मानने वाले ही रह सकते हैं। आज वह सब और यह हत्यारे म्यांमार को मानवता का पाठ पढ़ा रहे हैं।

जिस समय भारत सरकार बांग्ला देश में रोहिंग्या मुस्लिम शरणार्थियों के आपरेशन इंसानियत चला रही हैं ठीक उसी समय रखाइन में म्यांमार की सेना को एक कब्रगाह मिली। जिसमें से 45 हिन्दुओं के शव निकाले गए हैं। इस पूरे इलाके से करीब 1 हजार से ज्यादा हिन्दुओं के गायब होने की खबर है। म्यांमार की सेना का भी आरोप है कि इन हिन्दुओं की हत्या रोहिंग्या मुसलमानों ने की है और इनकी हत्या में आतंकवादी संगठन अराकान का भी हाथ है। मरने वालों में बहुत से बच्चे और महिलाएं भी शामिल हैं। जो रोहिंग्या हिन्दू हमले के बाद भागने में कामयाब हुए, उन्हें शरणार्थी शिविरों में रखा गया है। रखाइन में बहुत से ऐसे इलाके हैं, जहां से हिन्दुओं की पूरी आबादी को खत्म कर दिया गया है। इन इलाकों से हजारों की संख्या में हिन्दुओं का पलायन जारी है, लेकिन दुनिया को सिर्फ रोहिंग्या मुसलमानों का दर्द दिखाया जा रहा है।

खबर से साफ होता है कि म्यांमार में रोहिंग्या आतंकियों ने सिर्फ बौद्धों को ही निशाना नहीं बनाया था, बल्कि उनके निशाने पर हिन्दू समुदाय के लोग भी थे। कुछ उसी मानसिकता के साथ कि इस्लाम में अन्य मतों के लिए कोई जगह नहीं है। लेकिन दुखद बात यह कि एक ही इलाके में इंसानों पर हो रहे अत्याचार की चिन्हित रिपोर्टिंग हो रही है और पूरे मुद्दे का धर्मिक विभाजन किया गया है। डेली मेल की रिपोर्ट के अनुसार हिन्दुओं पर म्यांमार के रखाइन में शुरू हुए अत्याचार का यह सिलसिला थमा नहीं है, बल्कि दुर्भाग्य उनका पीछा करते हुए बांग्लादेश के शरणार्थी शिविर तक पहुंच गया है। शरणार्थी शिविर में पहुंची हिन्दू महिलाओं का दावा है कि उनके सिन्दूर पोंछ दिए गए, चूड़ियां तोड़ दी गई। यहां तक कि उनका धर्म परिवर्तन कर दिया गया और मुसलमानों से शादी करा दी गई। इस सबके बावजूद भी पिछले दिनों जन्तर-मंतर पर मानवता की दुहाई देने वाले धर्मनिरपेक्ष लोग और रोहिंग्या मुस्लिमों का दर्द देखने वाले चश्मे जिनमें खुद स्वामी अग्निवेश भी शामिल थे लेकिन इस खबर पर कोई अपनी नजर उठाने को तैयार नहीं है।

बांग्लादेश के कॉक्स बाजार में स्थित शरणार्थी शिविर में शरण लेने वाली पूजा का इसी महीने धर्म परिवर्तन कर राबिया बना दिया गया। अगस्त के आखिरी सप्ताह में म्यांमार में भड़की हिंसा में पूजा के पति की मौत हो गई थी। उसके पति व परिजनों को म्यांमार की सेना ने नहीं, बल्कि कुछ नकाबपोशों ने धर्म के नाम पर हत्या कर दी। हत्यारों ने उसे जिन्दा छोड़ दिया और बंदी बना लिया।

भारत के न्यूज चैनलों पर बैठे रोहिंग्या मुसलमान खुद को असहाय बता रहे हैं। जबकि उनकी बर्बरता कम नहीं हो रही है। बौद्धों के अलावा वह हिन्दुओं को भी निशाने पर ले रहे हैं। आतंकी संगठनों से रोहिंग्या मुस्लिमों की मिलीभगत साफ-साफ नजर आ रही है। भारत के ये स्वघोषित उदारवादी लोग और कुपढ़, धर्मनिरपेक्ष लोग इन्हें भारत में बसाने के पक्ष में क्यों लगे हुए हैं? जो मरते-मरते भी अपने मजहब के विस्तार के लिए अमानवीय तरीके अपना रहे हो, जिस समुदाय के बारे में इंटेलिजेंस की रिपोर्ट में भी आतंकी संगठनों से मिले होने की बात कही गयी हो उसको भारत में शरण देने के लिए भारत के मीडिया और अन्य संस्थानों में बैठे लोग मुखर होकर सामने आ रहें हैं, भला क्यों? जिस कश्मीर में आज रोहिंग्या मुसलमानों को शरण देने के लिए बड़े बड़े लेख लिखे जा रहें हैं, दलीले दी जा रही हैं, याचिका डाली जा रही हैं, उस कश्मीर में कश्मीरी पंडितों को बसाने के लिए क्यों सभी चुप हैं? जम्मू कश्मीर में जो दोमुंहे लोग रोहिंग्या की पैरवी कर रहें हैं वे जम्मू कश्मीर में पिछले 60 वर्षों से हो रहे शोषण पर चुप क्यों हैं? ये सिर्फ और सिर्फ इनका दोहरा चरित्र है। भारत को अस्थिर करने में ये सबसे ज्यादा मेहनत करते हैं। वैचारिक विरोध की आड़ में, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की आड़ में, संविधान की आड़ में ये लोग सिर्फ अपना एजेंडा चलाने में लगे रहते हैं।

जबरदस्ती मुसलमान बनाई गई रिका उर्फ सादिया किस तरह रोते हुए बता रही थी " उन्होंने हमारे घरों में घुसपैठ की और हमले किए। हमारे आदमियों के मोबाइल फोन छीन लिए गए और बांधकर बुरी तरह पीटा गया मेरे पति लोहार थे। मेरे सारे गहने ले लिए मुझे पीटने लगे सभी हिन्दुओं को पकड़कर एक पहाड़ी पर ले जाया गया और लाइन में लगाकर मार डाला गया। सिर्फ 8 महिलाओं को जिन्दा रखा गया उन्होंने कहा तुम अब हमारे साथ रहोगी हमसे शादी करो, हमारे पास उनके सामने समर्पण करने के अलावा कोई उपाय नहीं था। धर्म परिवर्तन की बात मानने के अलावा हमारे पास कोई चारा नहीं बचा था। वहीं से हमें बांग्लादेश के एक कैंप में ले जाया गया और धर्म परिवर्तन के नाम पर मीट खिलाया गया। अब सोचकर देखिये इन लोगों की मजहबी कट्टर मानसिकता क्या यह लोग भारत में बसाने लायक है? विराथू जैसे बौद्ध भिक्षु जो कभी हिन्सा मन में नहीं लाते शायद इनके इन्हीं कृत्यों की वजह से समझ गये होंगे कि अपना भिक्षु धर्म तभी निभा पाएंगे जब उनका धर्म रहेगा, वह रहेंगे, म्यांमार रहेगा और उनकी संस्कृति रहेगी। - ***सम्पादक***

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

प्रथम पृष्ठ का शेष

अब मुर्दे भी बने बड़ी मुसीबत

....दफनाने की जगह की ऐसी किल्लत हो गई है कि पुरानी कब्रें खोदकर उनकी जगह नई लाशें दफनाई जा रही हैं। कई यूरोपीय देशों में कब्र के लिए जमीन इतनी महंगी हो गई है कि जमीन से अस्थियां निकालकर उन्हें बड़े गड्ढों में जमाकर किया जा रहा है। इन सब हालात ने उन्हें जलाने के लिए मजबूर कर दिया। धरती पर लाशों का बोझ इस कदर बढ़ता जा रहा है कि आज बहुत से शहरों में नए मुर्दों को दफनाने के लिए जगह ही नहीं बची है। दिल्ली हो या लंदन, या हो न्यूयर्क, येरुशलम, सिंगापुर, लाहौर या फिर कोई और बड़ा शहर। सबका यही हाल है। इसकी वजह ये है कि आज की तारीख में हर जिन्दा इंसान के उल्टा 30 लाशें धरती पर हैं। नतीजा ये है कि ग्रीस जैसे छोटे देश में अपनों को दफनाने के लिए लोगों के पास जगह ही नहीं बची।.....

आज जहाँ पूरे विश्व की चिंता बढ़ती आबादी, रोजगार और स्वच्छ पर्यावरण आदि को लेकर बनी है वहीं इन दिनों जिन्दा इंसानों से ज्यादा गुजर चुके लोगों का बोझ बन रही एक नई समस्या दुनिया के सामने खड़ी हो रही है? मसलन बहुत से देशों के लिए मुसीबत यह बन रही है कि जिन लोगों के प्राण उनके शरीर छोड़कर निकल गए हैं, उनका क्या करें? कहां दफनाएं? कैसे जलाएं? अस्थियां कहां रखें? आदि-आदि चुनौती आज उनके सामने खड़ी हैं। ये ऐसे सवाल हैं, जिनसे बहुत से देश परेशान हैं। भारत भी इन देशों में से एक है। पिछले दिनों दिल्ली हाई कोर्ट ने कहा था कि जिस तरह कब्रिस्तानों और श्मशानों का विस्तार हो रहा है, उससे तो कुछ साल बाद लोगों के रहने के लिए जगह ही नहीं बचेगी। हालांकि श्मशान घाटों को समय के साथ क्षेत्रफल के विस्तार की जरूरत नहीं पड़ती किन्तु कब्रिस्तानों में जगह की किल्लत को लेकर पूरा विश्व समुदाय चिंतित दिखाई दे रहा है।

दरअसल धरती पर सिर्फ एक इंसान ही ऐसा जीव है, जो अपने गुजर चुके साथियों को सम्मान के साथ अंतिम विदाई देता है। ये इंसानी सभ्यता की पारम्परिक खूबियों में से एक है। लेकिन जब उसकी ये खूबी ही परेशानी का कारण बन रही हो तो इन्सान क्या करें? हर किसी के मत, मतान्तर और धर्म के अपने अलग-अलग सिद्धांत है पर जब हम आर्यावर्त की पवित्र पुस्तकों से खोज करते हैं तो यजुर्वेद आदेश देता है कि ''भस्मान्त शरीरम् '' (यजुर्वेद ४/१५) अर्थात् इस मनुष्य शरीर का मनुष्य से अंतिम सम्बन्ध जलाने और भस्म कर देने तक है। मतलब जलाना ही उत्तम मार्ग है। जबकि इस्लाम और इसाई समेत कई पंथ मृत इन्सान को दफनाने के पक्ष में खड़े रहते हैं। हालाँकि बदलते समय और सदी ने ईसायत की सोच पर काफी प्रभाव डाला जिस कारण आज जमीन की कमी की वजह से ही ईसाइयों में भी शवों को जलाने का चलन शुरू हो चुका है जबकि चर्च इसके खिलाफ है। लेकिन दफनाने की जगह की ऐसी किल्लत हो गई है कि पुरानी

कब्रें खोदकर उनकी जगह नई लाशें दफनाई जा रही हैं। कई यूरोपीय देशों में कब्र के लिए जमीन इतनी महंगी हो गई है कि जमीन से अस्थियां निकालकर उन्हें बड़े गड्ढों में जमाकर किया जा रहा है। इन सब हालात ने उन्हें जलाने के लिए मजबूर कर दिया।

धरती पर लाशों का बोझ इस कदर बढ़ता जा रहा है कि आज बहुत से शहरों में नए मुर्दों को दफनाने के लिए जगह ही नहीं बची है। दिल्ली हो या लंदन, या हो न्यूयर्क, येरुशलम, सिंगापुर, लाहौर या फिर कोई और बड़ा शहर। सबका यही हाल है। इसकी वजह ये है कि आज की तारीख में हर जिन्दा इंसान के उल्टा 30 लाशें धरती पर हैं। नतीजा ये है कि ग्रीस जैसे छोटे देश में अपनों को दफनाने के लिए लोगों के पास जगह ही नहीं बची। इसीलिए पुराने कब्रिस्तानों को खोदकर, उसमें से हड्डियां निकालकर, नए मुर्दों के लिए जगह बनाई जा रही है। यूनान की राजधानी एथेंस में 'थर्ड सीमेटरी', यूरोप के बड़े कब्रिस्तानों में से एक है। यहां काम करने वाले लोग कहते हैं कि कब्रिस्तान में रोज 15 लाशें दफन होने के लिए आती हैं। हाल ये है कि आज एथेंस में रहने की जगह ढूंढना आसान है, दफन होने के लिए दो गज जमीन नहीं मिलती। पूरे यूनान में एक भी शवदाह गृह नहीं है। नतीजा ये कि लाशों को दफन करना, यूनान के लिए राष्ट्रीय चुनौती बन गया है। इसीलिए अब ग्रीस में भी एक शवदाह गृह खोला जा रहा है।

यूनान की तरह ही हांगकांग भी कब्रिस्तान के लिए कम पड़ती जगह से परेशान है। जिस देश में रहने के लिए जगह इतनी मुश्किल से मिलती हो, वहां मुर्दे दफन करने की जगह का इंतजाम कैसे होता। इसीलिए, हांगकांग में सत्तर के दशक से ही लाशों को जलाने की परम्परा शुरू हो गई थी। हालाँकि पंडित लेखराम जी लिखते हैं कि मुर्दों का जलाना एक समय पूरे संसार में प्रचलित था। जैसा कि प्रसिद्ध इतिहासकार आनरेबल 'डाक्टर डब्ल्यू हंटर' लिखते है आर्य क्या हिन्दू क्या यूनान और इटली में भी लोग अपने मुर्दों को चिता पर जलाते थे (तारीखे हिन्द १८८४ ईस्वी , पृष्ठ ७) इस पर महर्षि मनु की आज्ञा है ''निषेकादि श्म्शानान्तो मन्त्रैर्यस्योदितो विधि: (मनु२/१६)

अर्थात्-गर्भस्थापना से लेकर श्मशान में जलाने तक मनुष्य शरीर के लिए मन्त्रों से वैदिक विधि कही गयी है। अर्थात् गर्भ से लेकर जलाने तक जो-जो कार्य मनुष्यों के लाभार्थ स्वयं अथवा लोगों के करने योग्य है उनकी आज्ञा वेदों में है। मृतक के शरीर को जलाने के लाभ और उसकी हड्डियों को जलाने के पश्चात् पानी अथवा खेत में डालने का वर्णन है जिनका लाभ सूर्य प्रकाशवत प्रकट है। चूना, हड्डी, रेत इत्यादि से पानी निर्मल होता है।

मनुष्य अपने मरने वाले साथियों को सम्मान से विदाई दे यह जरूरी कदम है और इसी पारम्परिक चीज को आने वाली नस्लों के हाथों में सौंपना चाहते हैं। सदियों से तमाम इंसानी सभ्यताओं में मुर्दों को मान देने का चलन है। हमें समझना होगा कि दुनिया की आबादी बहुत तेजी से बढ़ रही है। बढ़ती आबादी पर्यावरण के लिए बोझ है। तो बिना किसी धार्मिक पूर्वाग्रह के मृतक दाह संस्कार यानि जलाने के क्रिया को वैज्ञानिक पद्धति की नजर से देखते हुए स्वीकार कर लेना चाहिए। सैकड़ों लोगों की मजारों, कब्रों पर जो हजारों और लाखों करोड़ रुपये खर्च करके बड़े-बड़े मकबरे और भवन बनाये गये हैं अथवा बनाये जाते, वह धन आगे बच जायेगा बल्कि वह धन किसी अच्छे, प्राणिमात्र के लाभप्रद कार्य अर्थात शिक्षा, अनाथालय, अस्पताल आदि में व्यय होगा। इससे कब्र में जाया होने वाली जमीन बचेगी और पर्यावरण का भी लाभ होगा साथ ही मुर्दे भी परेशानी का सबब नहीं बनेगें। *-राजीव चौधरी*

बोध कथा

दिन दश के व्यवहार में झूठे रंग न भूल

विदुर एक दिन महाराजा धृतराष्ट्र के पास गये। धृतराष्ट्र बोले-''यह क्या हो गया है दुनिया को?''

विदुर ने कहा-''राजन्! मोह के वशीभूत होकर मनुष्य लोभ, क्रोध और भय से पागल हुआ जाता है, चिन्ता की आग में जला जाता है। जब तक वह लोभ, क्रोध और भय से मुक्ति नहीं पायेगा, चिन्ता की अग्नि समाप्त नहीं होगी।''

एक कहानी सुनाई विदुर जी ने-''एक था घना जंगल। उसमें कितने ही विषैले और भयंकर जीव-जन्तु चिल्लाते फिरते थे-सिंह और हाथी, सर्प और अजगर, चीते और रीछ। महान् अन्धकार था उसके अन्दर। भागता हुआ एक व्यक्ति उसके निकट आया। एक बहुत बड़े शरीर वाली भयानक स्त्री को उसने वहां देखा। वहां पांच विषैले सर्प देखे। वह भय के कारण भागा और कांपता-हांपता जंगल में दौड़ता चला गया। अंधेरे में एक तालाब में गिरा। परन्तु इससे पूर्व कि तालाब की उस तह में पहुंचता, जहां पानी नहीं था, किनारे पर लगे एक वृक्ष की शाखा उसके हाथ में आ गई। उससे लटक गया वह। जब कुछ होश आया तो उसने देखा कि नीचे गहरे तालाब की तह में एक भयानक सांप फन फैलाये बैठा है। उसकी आंखें अंगारों की भांति चमक रही हैं। ऊपर देखा कि एक छः मुख वाला हाथी उस वृक्ष को गिराने का प्रयत्न कर रहा है जिसकी शाखा से वह चिपटा हुआ था और यह भी देखा कि श्वेत और काले रंग के चूहे वृक्ष की शाखा को काट रहे थे। ऊपर मृत्यु, नीचे मृत्यु। भय से उसका रोम-रोम कांप उठा, परन्तु तभी वृक्ष की एक अन्य शाखा पर लगे शहद के छत्ते से बूंद-बूंद करके शहद चूने लगा ओर उसके होठों पर गिरने लगा। उसने शहद को चखा। उसके स्वाद में खो गया। भूल गया नीचे के सर्प को, छः मुख वाले उस हाथी को जो ऊपर चिंघाड़ता था, उन श्वेत और काले चूहों को जो शाखा को काट रहे थे, उस जंगल में चिल्लाते हुए सिंहों को, फुङ्कारते हुए अजगरों को, शोर मचाते हुए पशुओं को। उस व्यक्ति की भांति है यह मनुष्य। शाखा से लटका हुआ, शहद के स्वाद में सब-कुछ भूला हुआ है।''

धृतराष्ट्र ने कहा-''यह जंगल क्या है? वह स्त्री क्या है, जिससे डरकर वह भागा?''

विदुर ने कहा-'' संसार वह भयानक जंगल है। इसमें रोग, शोक, अग्नि, भूकम्प, बाढ़ और लड़ाई-झगड़े के पशु घूमते रहते हैं। इसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के सर्प रेंगते हैं। इसमें वह भयानक स्त्री है, जिसे बुढ़ापा कहते हैं। मनुष्य जीवन की जिस शाखा से चिपटा है, उसे दिन और रात्रि के श्वेत और काले चूहे काट रहे हैं। स्वयं शाखा को भी छः ऋतुओं वाला वह हाथी बनकर धक्के मार रहा है। नीचे भयानक सर्प के रूप में मृत्यु प्रतीक्षा कर रही है। इन सबको भूलकर यह अभागा मनुष्य आशा और निराशा के शहद की मिठास में खो गया। नीचे की मृत्यु और ऊपर का महानाश उसे दृष्टिगोचर नहीं होते।''

कबीरा यह संसार है, जैसा सेमल फूल।
दिन दश के व्यवहार में, झूठे रंग न भूल।।

-: साभार :-
बोध कथाएं

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

दुलर्भ होता राजनैतिक शिष्टाचार

.....वरिष्ठ पत्रकार मृणाल पांडे फिर चर्चा में आईं उन्होंने मोदी जी के जन्मदिवस पर एक गधे की तस्वीर के साथ लिखा- ''जुमला जयंती पर आनंदित, पुलकित, रोमांचित वैशाखनंदन।'' कोई और वक्त होता तो इसे व्यंग्य या कटाक्ष समझकर लोग टाल देते, लेकिन इन दिनों सोशल मीडिया युद्धभूमि बना हुआ है जिसका एक बड़ा शिकार ''इन्सान की सोच'' है।

..... अतीत में झांककर देखें तो वार्तालाप विरोध और आलोचना की ढेरों अच्छी परम्परा की मिसाल इसी भारतीय संसद में मौजूद है। कभी इसी भारतीय संसद में जवाहर लाल नेहरू भी थे, जो अपने विरोधी श्यामा प्रसाद मुखर्जी से माफी मांगने तक की हिम्मत रखते थे।.....

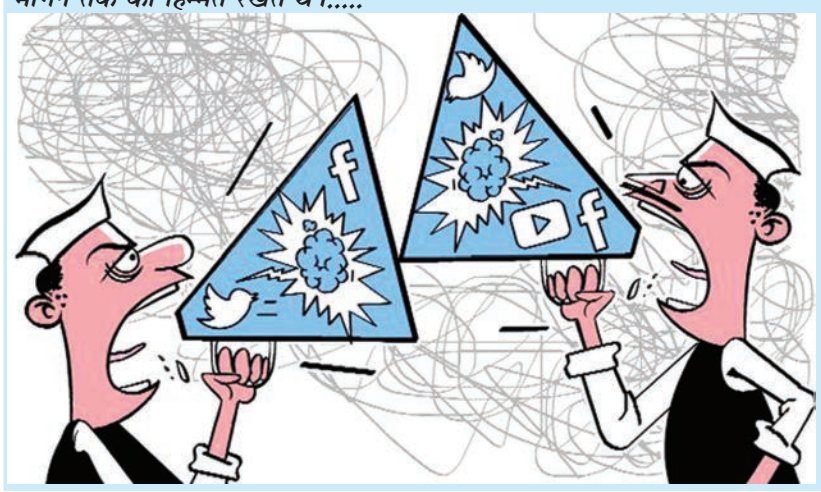

हाल के दिनों में अभद्रता की संस्कृति भारतीय राजनीति में इस कदर शामिल हो गयी कि लगने लगा शायद यह सब राजनीति का एक हिस्सा बन गया है। तू-तू, मैं-मैं तक सीमित रहती तो कोई बात नहीं लेकिन अब यह बदतमीजी और बेशर्मी पर उतर आई है और इस पर किसी एक राजनीतिक दल का एकाधिकार नहीं रहा। मसलन लगभग सभी इसमें शामिल हो चुके हैं। यदि बीते समय के कुछ बयानों पर गौर करें तो आसानी से समझ आ जायेगा जो जितना बड़ा बद्तमीज वह उतना ही बड़ा नेता आखिर हम किस भारत का निर्माण कर रहे हैं?

बसपा नेत्री मायावती के लिए एक भाजपा नेता द्वारा अपशब्दों का इस्तेमाल करने की कहानी हम सबने सुनी उसके पलटवार में बसपा नेताओं द्वारा उस भाजपा नेता की पत्नी और बेटी को पेश करने का फरमान सुनाया गया। हाल में कांगेस के बड़े नेता और पूर्व सूचना प्रसारण मंत्री द्वारा मोदी के जन्मदिन पर उन्हें अपशब्दों का उपहार दिया जाना हमने इसी राजनीति में देखा सुना है। ऐसा होने की कुछ जायज वजहें भी रही हैं। मैंने कहीं पढ़ा था कि संयम-शिष्टता का राजनितिक दल के नेताओं-समर्थकों का ट्रैक रिकॉर्ड उतना सदाचारी-संस्कारी नहीं रहा है जैसा देश बनाने का वे रोज नारा लगाते हैं। यदि कोई इस नई संस्कृति का विरोध दर्ज करता है तो उन्हें अक्सर इन सवालों का सामना करना पड़ता है, ''तब तुम कहाँ थे?'' और ''उस मामले पर क्यों नहीं बोले?''

गौरी लंकेश की हत्या के बाद निखिल दधीच को लेकर प्रेस क्लब से प्रधानमंत्री पर सीधा निशाना साधने वाली वरिष्ठ पत्रकार मृणाल पांडे फिर चर्चा में आईं उन्होंने मोदी जी के जन्मदिवस पर एक गधे की तस्वीर के साथ लिखा- ''जुमला जयंती पर आनंदित, पुलकित, रोमांचित वैशाखनंदन।'' कोई और वक्त होता तो इसे व्यंग्य, या कटाक्ष समझकर लोग टाल देते, लेकिन इन दिनों सोशल मीडिया युद्धभूमि बना हुआ है जिसका एक बड़ा शिकार ''इन्सान की सोच'' है। इन हालात में इन सब पर राजनीति होना लाजिमी है। अगर आप शिष्ट हैं तो और शिष्ट बनिए, अगर मानवतावादी हैं तो और उदारता दिखाइए, लोकतान्त्रिक हैं तो विरोधियों को और जगह दीजिए, अगर पढ़े-लिखे हैं तो तथ्यों-तर्कों की बात करिए। किसी को गधा और कुत्ता बनाकर आप अपनी तुच्छ मानसिकता का प्रदर्शन करते हैं।

इन सब हालातों में सवाल यह भी बनता है कि क्या भारतीय राजनीति सदा से ही ऐसी है या इसका यह विकृत रूप हाल ही में उभरकर आया? अतीत में झांककर देखें तो वार्तालाप विरोध और आलोचना की ढेरों अच्छी परम्परा की मिसाल इसी भारतीय संसद में मौजूद है। कभी इसी भारतीय संसद में जवाहर लाल नेहरू भी थे, जो अपने विरोधी श्यामा प्रसाद मुखर्जी से माफी मांगने तक की हिम्मत रखते थे।

यह सिर्फ एक उदाहरण नहीं है बल्कि पूर्व के भारतीय राजनीतिज्ञों ने विरोधी राजनेताओं के प्रति बेहतरीन आचरण और शालीनता के उदाहरण पेश किए हैं। 1957 में जब अटल बिहारी बाजपेई पहली बार लोकसभा में चुन कर आए तो जवाहरलाल नेहरू उनके भाषणों से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि एक दिन ये युवा सांसद भारत का नेतृत्व करेगा। कहते हैं 1984 के चुनाव प्रचार के दौरान जादवपुर से मार्क्सवादी कम्यूनिस्ट पार्टी के उम्मीदवार सोमनाथ चटर्जी के पैर छू कर एक महिला ने उनसे आशीर्वाद मांगा। बाद में सोमनाथ चटर्जी ये सुन कर हतप्रभ रह गए कि ये महिला और कोई नहीं, उस सीट से उनकी प्रतिद्वंदी ममता बनर्जी थी जो अंततः इस सीट पर विजयी हुई।

1984 के लोकसभा चुनाव में अटलबिहारी वाजपेई अपना चुनाव हार गए थे। उन्हें अपने इलाज के लिए अमरीका जाना था, जहाँ इलाज कराना अब की तरह पहले भी बहुत मंहगा हुआ करता था। राजीव गाँधी ने उन्हें अपना विरोधी होते हुए भी संयुक्त राष्ट्र जाने वाले भारतीय प्रतिनिधिमंडल का सदस्य बना कर भेजा। वर्ष 1991 में जब राजीव गाँधी की हत्या हो गई तो उनको श्रद्धांजलि देते हुए बाजपेई ने खुद ये स्वीकार किया कि राजीव ने उनके इलाज के लिए उन्हें अमरीका भेजा था। ''भारतीय जनता पार्टी के शासन के दौरान पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर और उस समय केंद्रीय मंत्री प्रमोद महाजन के बीच तीखी नोकझोंक हो गई। चंद्रशेखर ने प्रमोद महाजन से कहा कि आप मंत्री बनने के लायक नहीं हैं। इस पर प्रमोद महाजन ने तुनक कर जवाब दिया कि आप प्रधानमंत्री बनने के लायक नहीं थे। ये सुनना था कि बाजपेई और आडवाणी दोनों सन्न रह गए कि प्रमोद ने यह क्या कह दिया! लेकिन अगले दिन प्रमोद महाजन गए और उन्होंने चंद्रशेखर से सरेआम माफी मांगी।''

पहले की पीढ़ी के नेताओं में प्रतिद्वंदिता होते हुए भी एक दूसरे के प्रति सम्मान का भाव हुआ करता था जो अब नहीं रहा। वर्तमान प्रधानमंत्री ने जब अपना पद संभाला तो वह पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह से मिलने गए इस तरह के न जाने कितने किस्से हैं! वर्ष 1971 के युद्ध के बाद अटल बिहारी बाजपेई का इंदिरा गांधी की तुलना दुर्गा से करना, ममता बनर्जी का अपने धुर विरोधी ज्योति बसु का हालचाल पूछने अस्पताल जाना या अमरीका से परमाणु समझौता करने से पहले मनमोहन सिंह का बृजेश मिश्रा से सलाह मशविरा करना। आदि उदाहरण की बड़ी लम्बी कतार है लेकिन हाल के दिनों में अभद्रता की संस्कृति ने भारतीय राजनीति में इस कदर जड़ें जमाई हैं कि इस तरह की शालीनता के उदाहरण बस.. . बीते जमाने की बातें लगते हैं।

''सहयोग'' के लिए चाहिए आपका सहयोग

सर्वविदित है कि आर्य समाज के कार्य देश-विदेश में संचालित हैं, कुछ कार्य नितान्त आदिवासी क्षेत्रों में संचालित हैं। उन क्षेत्रों में कार्य करते हुए देश में व्याप्त गरीबी को निकटता से देखने का अवसर मिला, महसूस हुआ कि अभी देश की तस्वीर बदलने में समय लगेगा परन्तु इसमें हम सब मिलकर बहुत कुछ कर सकते हैं। यही सोच कर हमने यह विचार किया और महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से ''सहयोग'' नामक योजना का शुभारम्भ किया गया ।

'अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ' की पहल ''सहयोग'' वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति व शिक्षा के मूलभूत अधिकार के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत है । इस प्रयास व महत लक्ष्य की पूर्ति हेतु आपके संचालन में सामजिक सेवा में सेवारत आर्यसमाज के सदस्य व स्थानीय निवासी अपने परिवार के किसी भी सदस्य के वह वस्त्र जो उपयोगी हैं किन्तु किसी कारण से अब आपके उपयोग में नहीं आ रहे हैं तथा वह पुस्तकें जो पाठ्यक्रम में हैं पाठ्यक्रम (Course) पूरा कर लेने के पश्चात् अब अन्य किसी जरूरतमंद छात्र की शिक्षा में सहयोगी हो सकती हैं, को ''सहयोग'' के माध्यम से जरूरतमंद व्यक्ति तक पहुंचा सकते हैं।

आपके द्वारा संचालित आर्य समाज ऐसे वस्त्रों, जूतों, खिलोनों अथवा पुस्तकों को ''सहयोग'' की सहयोगी संस्था बनकर व "CLOTH BOX" स्थापित कर एकत्रित कर सकती है। पश्चात् ''सहयोग'' आपके सहयोग से एकत्रित वस्त्र, जूते, खिलोने, पुस्तकें एवं वे सभी अन्य वस्तुएं जो आपके लिए अनुपयोगी हैं किन्तु किसी दूसरे को सहयोग दे सकती हैं, को सहयोगी आर्य समाज व संस्थाओं से संकलित कर, छांटकर, पैककर देशभर के अनेक आदिवासी क्षेत्रों में आर्य समाज, संस्थाओं के माध्यम से जरुरतमंदों तक पहुंचाने का कार्य निष्पादित करेगी।

''**सहयोग**'' के विषय में किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त करने के लिए **श्री रवि आर्य जी** से मोबाइल नं. **9540050322** पर संपर्क कर सकतें हैं। सभी आर्य समाजों के सहयोग से दिल्ली में इस कार्य को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से संचालित किया जा रहा है।

निवेदक

धर्मपाल आर्य, प्रधान — विनय आर्य, महामन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

महाशय धर्मपाल, प्रधान — जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री
अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ

प्रथम पृष्ठ का शेष

कालगति विचित्र है। समय आया कि ऐसे सार्वभौम सिद्धान्त को न केवल भुला दिया गया, किन्तु विज्ञान के शिखर पर पहुंचने के अभिमानी पाश्चात्य जगत् के भ्रमपूर्ण विज्ञानियों ने हवन-यज्ञ को ही हानिकारक सिद्ध करना शुरू कर दिया। यह भी कहा कि आर्य लोग मूर्ख हैं जो अपना धन खर्च करके हवन करते हैं तथा उसे Co_2 उत्पन्न कर अपना तथा दूसरों का स्वास्थ्य चौपट करते हैं। फिर क्या था? हमारे देश के अर्धशिक्षित बाबू लोगों ने भी यही राग अलापना शुरू कर दिया और हवन यज्ञ का उपहास किया जाने लगा। उधर प्राचीन संस्कृति के उपासक हवन यज्ञ कर्त्ताओं ने भी उसके वैज्ञानिक गुणों को भुलाकर केवल पूजा-पाठ की चीज़ समझ लिया, अत: विवाहादि में हवन-यज्ञ के स्थान पर 'अग्यारी' मृतक संस्कार में एक तोला घी से 'कपाल क्रिया' और बड़े यज्ञों में केवल जौ, तिल आकद नाम मात्र की सामग्री का थोड़ा-सा हवन प्रचलित रह गया।

ऐसे अन्धकार काल में वेदों के पूर्ण ज्ञाता, सत्य के अप्रितिम उद्गाता, प्राचीन संस्कृति के अनन्दय भक्त ऋषि दयानन्द जी की सिंह गर्जना हुई। उन्होंने हवन यज्ञ के वैज्ञानिक लाभ बताते हुए उसको स्वास्थ्यवर्द्धक, रोगनाशक एवं वायुशोधक बताया तथा मनुष्य मात्र के लिए भोजन की ही तरह से हवन करने का विधान तथा ऐसा न करने वालों को 'पापी' बताया, अर्थात् जिसका फल रोग व दु:ख बताया।

कुछ समय तक ऋषि के इस सिद्धान्त और पाश्चात्य विज्ञान की बड़ी मुठभेड़ रही। विदेशी सभ्यता में पले भारतीय भी उपर्युक्त भ्रमपूर्ण आधुनिक विज्ञान को वेद वाक्य की भांति प्रामाणिक मानकर आर्यों पर आक्षेप करते रहे और हवन को हानिकर कहते रहे। आर्यों को अपने ऋषियों की दिव्य मेधावी बुद्धि पर विश्वास था। वे समझते थे कि पाश्चात्य विज्ञान के सिद्धान्त तो नित्य ही बदलते रहते हैं। आज जो विज्ञान उसको हानिकारक मान रहा है, सम्भव है कभी इसके लाभों को समझकर उपयोगी बताने लगे। हुआ भी ऐसा ही। हवन की उपयोगिता प्रत्यक्ष देखकर पाश्चात्य विज्ञान के सिद्धान्त बदले। आज का विज्ञान बताता है कि जो कृमि हमारे शरीर को रोगग्रस्त करते हैं उन्हें धुआं नष्ट कर देता है।

फ्रांस के प्रसिद्ध रसायन वेत्ता मिस्टर त्रिल ने विज्ञान द्वारा ज्ञात किया कि लकड़ी जलाने में 'फॉर्मिक आल्डीहाइड' नामी एक गैस निकलती है जिसका गुण सब प्रकार के कृमियों (Germs) को मारना है। आजकल यह गैस जल में मिलाकर बाजार में 'फार्मेलिन' के नाम से दवाईयों की दुकानों पर बेची जाती है। यह मकानों के वातावरण को शुद्ध करने के काम आती है पर इस रूप में यह फिनाइल से भी अधिक बदबूदार होती है। पाश्चात्य विज्ञान जिस चीज को कल हानिकारक समझा था, आज उसे रोग निवारक मानने लगा और हवन पर किया हुआ वह आक्षेप जाता रहा, परन्तु उसके अन्य गुण अभी गुप्त ही रहे।

आगे चलकर मि. त्रिले ने ही परीक्षण के पश्चात् ज्ञात किया कि शक्कर (खांड) जलाने से भी फार्मिक आल्डीहाइड गैस निकलती है, जो रोग नाशक है। हमारे हवन यज्ञ में गन्ने की खांड तो जलाई ही जाती है, अन्य वस्तुएं घी, दूध, मुनक्का, छुहारा, चावल, किशमिश आदि जो पदार्थ हवन में जलाए जाते हैं उनमें भी रसायन शास्त्र ने कृमिनाशक शक्कर को पाया है। (सोम तो रोगनाशक प्रसिद्ध ही है।)

विज्ञान ने और भी उन्नति की और उपर्युक्त वस्तुओं को पृथक जलाकर विज्ञान वेत्ताओं ने परीक्षण किए और फ्रांस के विज्ञान वेत्ता प्रो. टिलबर्ट ने बताया कि खांड जलाने से हैजा, तपेदिक, चेचक आदि का विष भी शीघ्र नष्ट होता है।

डॉ. टाटलिस्ट ने बताया कि मुनक्का, किशमिशादि जलाने से टाईफाईड ज्वर के कीटाणु केवल आधे घण्टे में और दूसरे रोगों के कीटाणु दो घण्टे में समाप्त हो जाते हैं। फ्रांस के ही डॉ. हेफकिन ने सिद्ध किया कि घी जलाने से रोग कृमियों का नाश होता है। (आज यह भी खोज होनी ही चाहिए कि बाजारू कबाड़ सामग्री को जलाने से कौन-कौन से रोग पैदा होते हैं तथा इनसे क्या-क्या हानियां हैं ताकि लोग उन्हें छोड़ चार प्रकार की सुगन्धित, पुष्टकारक, रोगनाशक व मिष्ट पूर्वोक्त सामग्री घर में बनाकर ही होम करें व लाभ उठाएं)।

देखा, ऋषि बुद्धि का चमत्कर? जिस बात को हमारे पूर्वज ऋषि लाखों (अरबों) वर्ष पूर्व ही बता चुके थे और जिस बात को वैदिक विज्ञानी दयानन्द ने (उस समय) पाश्चात्य विज्ञान के विपरीत होने पर भी बलपूर्वक कहा था, आज वही बात पाश्चात्य विज्ञान से भी सत्य सिद्ध हो रही है। (अत: वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है) विचार करें-

1. सबको पता है कि स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म अधिक शक्तिशाली है तथा सूक्ष्म स्थूल में प्रवेश कर सकता है, स्थूल सूक्ष्म में नहीं। जैसे आटे में मिले शक्कर को मनुष्य नहीं पृथक कर सकता पर चींटी बड़ी सुगमता से कर लेती है क्योंकि उसका मुंह सूक्ष्म है।

सोने का टुकड़ा खाने से कुछ नहीं होता। वरक खाने से कुछ शक्ति आएगी और बहुत सूक्ष्म (भस्म) बनाकर खाएं तो पहले ही दिन उसकी गरमी अनुभव होती है, कुछ समय में चेहरा सुर्ख होगा व शरीर में शक्ति आएगी। अत: यज्ञ में जो औषधियां आदि डाली जाती हैं उनके परमाणु यज्ञाग्नि से सूक्ष्म होकर स्थूल रूप से अधिक शक्तिशाली हो जाते हैं।

2. किसी वस्तु को सूक्ष्म करने का सबसे बड़ा साधन अग्नि है। परीक्षा हेतु एक लाल मिर्च एक आदमी सुगमता से खा सकता है, परन्तु खरल में घोटकर सूक्ष्म करने पर उसकी शक्ति बढ़ती तथा होम से शक्ति कणों द्वारा सूक्ष्म कीटाणु वाले रोग दूर हो सकते हैं तथा स्वास्थ्य व आनन्द शक्ति आदि भी मिलती है।

3. परीक्षण के बाद केमिकल्स प्रापर्टीज की सम्मति इस विषय में निम्न है-

जायफल, जावित्री, बड़ी इलाइची, सूखा चन्दन आदि अग्नि में जलाने से उनके उपयोगी अंश ज्यों-के-त्यों रहते हैं या सूक्ष्म हो जाते हं। प्रथम इससे सुगन्धित तेल गैस बनकर निकलते हैं।(हवन यज्ञ में ये चीजें अपने असली रूप में मिलती हैं, अग्नि इन चीजों को गैस बना देती है-(डॉ. अग्निहोत्री जी) उड़ने वाले तेलों के परमाणु 1/10 हजार से लेकर 1/10 करोड़ सेंटीमीटर व्यास के होते हैं।

इतने सब के बाद भी Co_2 का आपेक्ष रह गया कि यह दम घोटने वाली होने से हानिकारक है।

उत्तर- यह बात भी हमारे ऋषि भली प्रकार से जानते थे, तभी तो उन्होंने यज्ञ को इतना लाभप्रद मानकर भी ऐसी खुली आज्ञा नहीं दी कि चाहे किसी भी समय, कितनी और कैसी भी लकड़ी लेकर, कितने ही बड़े कुण्ड में, कितनी ही (कैसी भी) सामग्री जला दी जाय। उससे सदा लाभ ही होगा। उन विचारशील मनीषियों

- शेष पृष्ठ 7 पर

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के तत्वावधान में आर्य प्रतिनिधि प्रशिक्षण सत्र सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के तत्वावधान में दो दिवसीय आर्य प्रतिनिधि प्रशिक्षण वर्ग का आयोजन आर्यसमाज नैनीताल में 23 व 24 सितम्बर को किया गया जिसमें गढ़वाल व कुमाऊं मंडल की सभी आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों को आमन्त्रित किया गया। अनेक समाजों से अनेकों आर्य महिला पुरुषों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। 22 सितम्बर से ही तीव्र वर्षा प्रारम्भ हुई और 24 की सायं तक जारी रहने का एक लाभ यह हुआ कि जो आर्यजन पधारे थे वे पूरे समय कार्यक्रम में मौजूद रहे, घूमने की इच्छा लेकर भी आये होंगे तो प्रकृति ने अवरुद्ध कर दिया। हानि यह रही कि अनेक जन चाह कर भी सम्मिलित न हो सके।

इस कार्यक्रम में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के उपमन्त्री श्री विनय आर्य जी ने विशिष्ट चर्चा सत्र लिए। प्रथम सत्र 2 घण्टे का रहा जिसमें आर्यसमाज की स्थापना के मूल उद्देश्यों, स्थापना काल से अब तक की गौरव शाली यात्रा तथा सांगठनिक स्वरूप पर विस्तृत चर्चा की गई। द्वितीय सत्र में 2 घण्टे तक वैदिक धर्म के आधार 'यज्ञ' की वैज्ञानिकता पर सप्रमाण चर्चा हुई। गत वर्ष कराए गए यज्ञ विषयक अनुसन्धान के वैज्ञानिक परिणामों को प्रस्तुत किया गया।प्रत्येक समाज में यज्ञ के प्रचार-प्रसार पर विशेष बल दिया जाएगा ऐसा संकल्प भी कराया गया। सायंकालीन सत्र व द्वितीय दिवस का प्रात: कालीन सत्र श्री विनय विद्यालंकार जी द्वारा लिया गया जिसमें अनेक विषयों पर चर्चा हुई विशेष रूप से आर्यसमाज के आध्यात्मिक पक्ष को दृढ़ता के साथ जानकर प्रचारित करने की आवश्यकता पर बल दिया गया। कार्यक्रम का समापन प्रान्तीय सभा की त्रैमासिक बैठक के साथ हुआ।

इस प्रशिक्षण वर्ग का समस्त आयोजन आर्यसमाज नैनीताल द्वारा किया गया, एतदर्थ वहाँ के प्रधान श्री सुबोध जी कंसल, मन्त्री श्री केदार सिंह रावत जी, सर्वप्रिय कंसल जी, सुनील अग्रवाल जी, धर्मेन्द्र शर्मा जी, सुशील साह जी आदि का आभार। समस्त भोजन आदि व्यवस्था का दायित्व श्री बसन्त कंसल जी, (प्रधान आर्यसमाज हल्द्वानी) व श्री विनोद आर्य जी द्वारा निर्वहन किया गया। इस अवसर पर आर्य साहित्य भी उपलब्ध कराया गया। सभी प्रतिभागियों का विशेष आभार।

-विनय विद्यालंकार, प्रधान

Veda Prarthana - 16 A

May My Yajnas (Conduct in Life) be Virtuous and Sincere, Not Mere Rituals

- Acharya Gyaneshwarya

अस्मात्त्वमधि जातोऽसि त्वदयं जायतां पुनः। असौ स्वर्गाय लोकाय स्वाहा।।

Asmattvam adhijato asi tvadayam jayatam punah. Asou swargaya lokaya swaha.

(Yajur veda 35:22)

Dear God, You are called Pavakagne i.e. Purifying and Enriching Light because You purify and spiritually enrich those persons who follow Your teachings move away from performing wrong or evil deeds. Dear God, while performing the havan-yajna we have thousands of times put oblations of fragrant herbs so that they make the whole ambient environment fragrant. What good has been our effort so far? Not much! It has been a failure because putting more fragrant herbs in the havan kund has been a ritual, but we have not yet made much effort to make our personal lives more spiritually fragrant by adopting virtuous havits and by becoming more generous so that others can enjoy some benefit from our abilities and prosperity.

Dear God, You are called Tapakagne i.e, Protecting and Warming Light that protects and comforts those persons who follow Your teachings just like a physical fire warms persons who are shivering due to cold temperature. Dear God, while performing the havan-yajna we have thousands of times put oblations of medicinal herbs especially gathered from the Himalaya mountains so that they make the whole ambient environment becomes disease free. What good has been our effort so far? Not much! It has been a failure because putting more medicinal harbs in the havan kund has been a ritual, but we have not yet made much effort to make our mind free from vices and adopting virtuous moral desires and habits.

Dear God, You are called Bhavyagne i.e. Great Light that gives honest, sweet, and respectful disposition to those persons who follow Your teachings. Dear God, while performing the havan-yajna we have thousands of times put oblations of sweet products such as sweet herbs, raisins, pure sugar candy, coconut pieces etc, so that they make the ambient environment sweet and enriching. What good has been our effort so far? Not much! It has been a failure because putting more sweet herbs etc. in the havan kund has been a ritual. but we have not yet made our voice full of honest but sweet comforting words, nor have made much effort to make our interactions with others simple, sweet and respectful of others.

Dear God, You are called Adhvaragna i.e. Light that makes thos persons who follow Your teachings strong, healthy and non&violent. Dear God, while performing the havan-yajna we have thousands of times put oblations of ghee, fragrant and medicinal herbs, various nuts and seeds that make the ambient environment healthy. What good has been our effort so far? Not much! It has been a failure because putting all of these ingredients of samigri in the haan kund has been a ritual, but we have not changed our personal daily habits to those that are health promoting and will make us strong and disease free such as doing daily exercise, eating balanced healthy foods in moderation. Moreover, we have not yet changed our personal behaviors of selfishness to become caring, kind and loving to other beings.

O Divine Being! My goals in performing this havan- physical yajna were not merely to light the fire, put kindling, ghee and herbs in it to purify the ambient environment, my goals were greater and loftier. My aim was to kindle and enlighten my soul by making a firm commitment to follow Your message in life by doing virtuous deeds and living a virtuous life as well as y being generous and spreading Vedic Dharma to others. By purifying myself, I want to consciously become aware of my eternal soul to be separate and distinct from my body. I want to steadily purify my soul by burning away my wrong and sinful desires and old bad sanskars (latent or dormant memories) so that in the future they do not re-emerge just like the physical fire of yajna-havan burns the kindling and fragrant herbs and turns them into ashes, or a grain roasted in the fire never germinates again. Dear God, just as the physical fire of yajna lights the surounding area and removes darkness, similarly, I will first enlighten myself and then become more committed to promoting Your message in the Vedas and truth. I will beome more selfless, hardworking and be willing to withstand any hardships that come along the way so that I may progressively become closer to You. Moreover, by doing so I will acquire many wonderful gifts given by You such as long life, vitality and strength, virtuous family and progeny, aninmal wealth for milk and agriculture, good fame, wealth and prosperity, and finally spiritual enlightenment. Without all of them my yajna of life will be incomplete.

Dear God from now on as I perform the physical yajna (havan) to make the ambient environment pure, fragrant and bright, similarly, I also commit myself to purifying and enlightening my inner-self i.e. my soul and mind. Dear Agnideva, You are Omnipresent Divine Being who enlightens everybody and is benevolent to everyone. Please enlighten my antahkaran i.e. my mind, chit (the site of latent or dormant memories), ego and intellect and help burn away my wrong, sinful or evil desires, inclinations and sanskars as well as replace them with virtuous knowledge, wisdom, strength and bliss. May all my shortcomings such as ignorance, laziness, jealousy, lust, vanity and others be destroyed and eliminated. O Divine Being! The yajna of my life's Journey will be complete and successful only when I free myself from all bondages generated by ignorance and moh i.e. worldly attachments or inftuations and instead replace them with the attainment of Your realization and experiencing pure bliss which alone is true swarga and not a hypothetical physical place located somewahere in the so called 'heaven'. It is then that the chanting of the last four words of yajna ceremony sarvam wai poornam swaha (which mean everything chanted and done in yajna now is complete and is for the benevolence of all) will be truly successful. Until I reach that stage my yajna is incomplete. Dear God, pleae help me because without Your assistance I alone cannot successfully complete the yajna and accomplish the goals of my life's journey.

(To get rid of your vices and bad conduct in life: also see mantra#14,15,18,20,22 and 23)

आओ ! संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ - 28 (फ)

छन्द रचना

गतांक से आगे....

वंशस्थ

वंशस्थ या वंशस्थविलः - इस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, तगण, जगण और रगण के क्रम से 12 वर्ण होते हैं। पद्य में लक्षण और उदाहरण देखिए:

वदन्ति वंशस्थविलं जतौ जरौ

उदाहरण:

। ऽ । ऽ ऽ ।। ऽ । ऽ । ऽ

न तस्य कार्यं करणं च विद्यते

न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते ।

पराऽस्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते

स्वाभाविकी ज्ञान-बल-क्रिया च।।

श्वेताश्वतर/6/8

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

मो. 9899875130

प्रेरक प्रसंग

तब ऐसे ही दिन थे

शाहपुरा (राजस्थान) में एक आर्य पुरुष ने आर्यसमाज की बड़ी सेवा की। उनका नाम था हकीम सन्तरामजी आर्यमुसाफिर। आप एक बार अमृतसर जिला के भंगाली ग्राम में प्रचार के लिए गये। भंगाली नाम के दो ग्राम थे। एक छोटा, एक बड़ा। दोनों में आधा मील की दूरी थी। ग्राम का नम्बरदार ही आर्यसमाज का प्रधान था। वे योग्य विद्वान् भी थे और सुयोग्य हकीम भी थे।

उस ग्राम में कभी एक हिन्दू एक मुसलमान स्त्री के लिए मुसलमान बन गया था। अब जब आर्यसमाज का सन्देश सुना तो उसे पश्चात्ताप हुआ। उसने शुद्ध होने की इच्छा व्यक्त की। हकीम सन्तरामजी ने शुद्धि के लिए सभा बुलाई। सारी बिरादरी ने कहा कि आर्यसमाज यदि शुद्धि कर दे तो हम इसे बिरादरी में मिला लेंगे।

हवन रक्खा गया। हवनकुण्ड ही न मिला। एक कड़ाही से हवनकुण्ड का कार्य लिया गया। मुण्डन के लिए नाई न मिला। दोनों ग्रामों में एक ही नाई था। वह भी ग्राम से बाहर गया हुआ था। नाई की स्त्री को बुलाया गया। वह भी ठीक प्रकार से उस्तरा न चला सका। अन्त में कैंची से उसका मुण्डन किया गया। उसे शुद्ध करके बिरादरी में मिला लिया गया। उसने वह स्त्री छोड़ दी। तब इतना ही बहुत कुछ था। कुछ अधिक जागृति होती तो स्त्री को भी शुद्ध कर लिया जाता। उस समय इतना कुछ कर पाना भी एक क्रान्ति समझा जाता था।

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

32वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मन्दिर मानसरोवर पार्क (रमन भट्ट भवन) शाहदरा के तत्त्वावधान में 13 से 15 अक्टूबर 2017 के मध्य अपने 32वें वार्षिकोत्सव का आयोजन कर रहा है। इस अवसर पर यज्ञ, भजन व प्रवचन प्रस्तुत किये जाएंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीधर्मदेव खुराना (प्रधान आर्य समाज चौरा माज़रा, करनाल,हरि.) करेंगे आर्य महिला सत्संग श्रीमती उषा किरण कथूरिया जी की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा।

-संदीप वेदालंकार, मंत्री

आर्यसमाज नजफगढ़ दिल्ली का 105वां वार्षिकोत्सव समारोह

आर्य समाज नजफगढ़ नई दिल्ली का 105वां वार्षिकोत्सव 13-14-15 अक्तूबर को हनुमान मन्दिर धर्मशाला, धर्मपुरा नजफगढ़ में मनाया जाएगा। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: 8 से 1 बजे तक यज्ञ भजन एवं प्रवचन होंगे। सायंकालीन भजन प्रवचन सायं 7-30 से 10:30 बजे तक होंगे। - *मंत्री*

132वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज एटा का 132वां वार्षिकोत्सव 8 से 10 अक्टूबर तक आर्य समाज मन्दिर, आर्य समाज मार्ग, मेहता पार्क एटा में आयोजित होगा। इसके अन्तर्गत वानप्रस्थ दीक्षा, युवा, वेद व महिला सम्मेलन आयोजित किये जाएंगे।

-प्रताप सिंह वर्मा, मन्त्री

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज मालवीय नगर, नई दिल्ली

प्रधान - श्री हरनारायण मिथानी
महामंत्री - श्री प्रमोद पाठक
कोषाध्यक्ष - श्री विनोद कद

भव्य वेदकथा का आयोजन

आर्य समाज विवेक विहार, दिल्ली के तत्त्वावधान में 23 से 29 अक्टूबर के बीच भव्य वेदकथा का आयोजन किया जा रहा है। मुख्य अतिथि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य एवं विशिष्ट अतिथि महामंत्री श्री विनय आर्य जी होंगे। 14 व 15 अक्टूबर को बाल कार्यक्रम एवं नैतिक शिक्षा शिविर कक्षा 12 तक के छात्रों के लिए आयोजित किया जाएगा। यज्ञ एवं प्रवचन आचार्य ब्रह्मदेव वेदालंकार जी एवं श्री विजित शास्त्री जी करेंगे। भजन श्रीमती राज शर्मा एवं आचार्य अशीष जी के प्रवचन करेंगे।

- गीता ग्रोवर, महामन्त्री

गुरुकुल स्नातक संगोष्ठी का आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा शीघ्र ही गुरुकुल स्नातक संगोष्ठी का आयोजित करना चाहती है, जिसमें ऐसे सभी महानुभावों जो गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति से शिक्षा प्राप्त हैं तथा दिल्ली में रहते हुए अपना व्यवसाय-व्यापार अथवा दिल्ली के विद्यालयों अथवा अन्य संस्थानों में अध्यापन कार्य में सेवारत हैं एवं पुरोहित कर्म नहीं करते हैं, को आमन्त्रित किया जाएगा। अत: यदि आप ऐसे महानुभाव हैं अथवा किसी ऐसे महानुभावों को जानते हैं तो कृपया अपना/उनका नाम, पता, मो. नं., ईमेल पता श्री राजीव चौधरी जी (09540095151) को लिखवाने अथवा daps.mediadesk @gmail.com पर भेजने की कृपा करें, जिससे संगोष्ठी की सूचना भेजी जा सके। - *महामन्त्री*

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।- *सत्यप्रकाश आर्य 9650183335*

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

वैदिक संस्कृति ज्ञान वर्धिनी प्रतियोगिता सम्पन्न

आर्य समाज खेड़ा अफगान (सहारनपुर) और वैदिक संस्कृति उत्थान न्यास के संयुक्त तत्त्वावधान में दस विद्यालयों में वैदिक संस्कृति ज्ञान वर्धिनी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें लगभग एक हजार विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का उद्देश्य भारत को विश्व गुरु बनाना है ताकि आज की भटकी युवा पीढ़ी देश के खोये स्वाभिमान, संस्कृति पुन: स्थापित कर सकें। प्रतियोगिता एवं पारितोषिक वितरण समारोह 19 नवम्बर 2017 को होगा। इस अवसर पर सर्वश्री कुंवर पाल सिंह आर्य, वेद भूषण, मनोज कुमार आर्य, श्रवण कुमार, संजय कुमार, शिवम् कुमार आदि महानुभावों का विशेष योगदान रहा।

- अमित कुमार आर्य, मंत्री

पृष्ठ 5 का शेष

आयरलैण्ड और द. अमेरिका में ....

ने इन सब बातों के वैज्ञानिक ढंग पर नियम बनाए ताकि Co_2 ज्यादा न पैदा हो (बाजारू सामग्री वाले सावधान) यज्ञ कुण्ड के चारों ओर एक नाली बनाई जाती है। उसमें पानी भर जाता है, (तथा पानी भी वहां रहता है,) जिससे यह गैस जितनी ऊपर पहुंच जाय वह तो वनस्पति वृद्धि का कार्य करे (इसका वैज्ञानिक नियम आगे आ रहा है। नीचे बचे को पानी चूस ले (इसीलिए संस्कार आदि में मिट्टी के घड़े में पानी भी रखते हैं तथा औषधि के साथ Co_2 बेअसर होती है)।

अत: जो जन ऋषियों की बताई विधि पर ध्यान न देकर, मनमाने तरीके से इन वस्तुओं को आग में जलाएं, सम्भव है, लाभ के साथ वे कुछ हानि भी उठाएं जैसाकि देखा भी गया है कि बाजारू, सस्ती, अशुद्ध सामग्री से नियम विरुद्ध हवन करने वाले रोगियों की खांसी इत्यादि बढ़ जाती है, परन्तु विधिपूर्वक हवन यज्ञ से तो तपेदिक जैसे भयानक रोग भी दूर हो सकते हैं। (अब तो बाजारू सामग्री को छोड़ो। क्यों पैसा खर्च करें प्रदूषण फैलाकर पाप बटोरते और समय भी नष्ट करते हो?)

अब Co_2 के बारे में भी जानें। प्रो. बालकृष्ण जी-''पदार्थ विद्या से ज्ञात हुआ कि कतिपय पदार्थों से प्रकाश गुजर सकता है, पर धर्म (गर्मी) नहीं।

आपने गर्म घरों (Hot Houses) को देखा ही होगा। उनमें अधिक उष्मा वाले पौधे लगाए जाते हैं। शीशा सूर्य की किरणों को अपने में से जाने देता है, पर अन्दर के धर्म को घर से बाहर नहीं। अत: शीशमहलों में गर्मी अधिक रहती है। Co_2 भी इस विषय में शीशे जैसा ही कार्य करता है। उसमें से सूर्य रश्मियां गुजर जाती हैं, परन्तु भूमि से टकरा कर बाहर नहीं आ सकतीं। (प्रभु की रचना न्यारी है। गुणों का अन्त नहीं) वायु में 1,000 भाग में सिर्फ 3 भाग Co_2 है। इसका फैलाव भूमि पर एक प्रकार का पर्दा बना देता है। क्योंकि यह साधारण वायु से 1.5 (डेढ़) गुणा भारी है। भूमि व इस पर्दे के मध्य धर्म कैद रहता है। ज्यों-ज्यों वह पर्दा अधिक मोटा होगा त्यों-त्यों थोड़ा धर्म निकलकर वायु मण्डल में बिखर जाएगा। ऑक्सीजन तथा नाईट्रोजन में उपर्युक्त प्रकार से धर्म को रोकने की शक्ति नहीं है। अत: अगर Co_2 वायुमण्डल में कम हो जाय तो धर्म के बिखर जाने से इतनी सर्दी पड़ने लगेगी कि यह भूमि किसी जीव को धारण नहीं कर सकेगी। भूगर्भ विद्या की एक प्रसिद्ध पुस्तक में लिखा है कि धर्म ग्रहण करने का गुण धारण करने के कारण Co_2 वायु पर बड़ा प्रभाव डालती है। उसकी मात्रा में थोड़ा-सा भी भेद होने से बड़े-बड़े परिवर्तन हो जाएंगे। यदि वर्तमान मात्रा को केवल दुगुना (1000 में 3 के स्थान पर 6 कर दिया जाए तो भूमि की सारी बर्फ पिघल कर ध्रुवों में समशीतोष्ण जलवायु हो जाए और यदि मात्रा आधी कर दी जाय तो सारी भूमि पर हिम-ही-हिम छा जाये।) (ऐसे-ऐसे नियम भी, नियन्ता निराकार सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान ईश्वर को सिद्ध करता है)।

इसी प्रकार प्रसिद्ध रसायनशास्त्रकर्त्ता मोएडालीफ लिखते हैं- ''वायु में Co_2 की मात्रा पर भूमि का ताप आधारित रहता है। भिन्न-भिन्न कालों में ताप की भिन्नता का प्रधान कारण Co_2 की भिन्नता थी।''

आप समझ गए होंगे कि यदि कहीं कार्बन गैस वायुमण्डल में छोड़ी जाए, तो वहां की गर्मी बढ़ेगी। यह नियम है कि जहां गर्मी अधिक होगी यदि वहां जल हो तो वनस्पति की अत्यन्त बहुतायत होगी।

अत: हवन से (उच्चकोटि का) Co_2 पैदा कर हम धर्म भी बढ़ाते हैं जिससे अन्न फलादि की अधिक उत्पत्ति होती है। इसके प्रत्यक्ष उदाहरण भी हैं। ज्वालामुखी पर्वतों से यह वायु निकलती है उनके आस-पास वृक्ष तथा वनस्पति अधिक होती है। फ्रांस में यूबरीन में एक चश्मे से यह वायु निकलती है, अत: वहां वृक्षादि की भी बहुतायत है।

उसको हमारे ऋषि बहुत पहले समझकर हवन का एक उद्देश्य अन्न को बढ़ाना मानते थे। (आज विज्ञान से भी यही सिद्ध हो चुका है)। गीता -अन्नाद्भवति भूतानि पर्जन्यादन्न सम्भव:। यज्ञाद्भवन्ति पर्जन्यो... जीव अन्न से ही पैदा हाते हैं अन्न वृष्टि से, शुद्ध वृष्टि यज्ञ से....।

- स्वामी वन्द्योश्वर मुमुक्षु वानप्रस्थ

कृत पुस्तक वेद एवं यज्ञ के अनंत लाभ

नोट - ये लेखक के अपने विचार हैं। इनसे सम्पादक का मैतेक्य होना आवश्यक नहीं है। पाठकों/विद्वानों एवं लेखकों के विचार सादर आमन्त्रित हैं।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 2 अक्टूबर, 2017 से रविवार 8 अक्टूबर, 2017
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.एन.डी.)-11/6071/2015-2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 5-6 अक्टूबर, 2017
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0सी0) 139/2015-2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 4 अक्तूबर, 2017

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थानों की ओर से
आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में

134वाँ महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण दिवस समारोह

दिनांक : गुरुवार 19 अक्टूबर, 2017 (दीपावाली)

समय : प्रात: 8 से 12 बजे

स्थान : रामलीला मैदान, नई दिल्ली

समस्त आर्यसमाजों में सत्संगों में कार्यक्रम की सूचना दें एवं बसों की व्यवस्था करके सभी सदस्यों एवं इष्टमित्रों सहित सपरिवार पधारकर पूज्य ऋषिवर को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करें।

-: निवेदक :-

महाशय धर्मपाल	सुरेन्द्र रैली	सतीश चड्डा	अरुण प्रकाश वर्मा
प्रधान	*व.उपप्रधान*	*महामन्त्री*	*कोषाध्यक्ष*

प्रतिष्ठा में,

खुशखबरी! खुशखबरी!! खुशखबरी!!!

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
वर्ष 2018 का कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150, मो. 09540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक
रविवार 15 अक्तूबर, 2017 दोपहर 2:30 बजे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अत्यावश्यक अन्तरंग सभा बैठक रविवार 15 अक्तूबर, 2017 को आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली में दोपहर 2:30 बजे आयोजित की गई है। दिल्ली सभा के समस्त अधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों एवं विशेष आमन्त्रित सदस्यों से निवेदन है कि बैठक में अवश्य ही पहुंचकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराएं एवं निर्णयों में अपनी भागीदारी प्रस्तुत करें। सभी सदस्यों को पत्र के माध्यम से विधिवत् सूचना प्रपत्र भेजे जा चुके हैं। - ***विनय आर्य, महामन्त्री***

बच्चों को दें ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजन से भरपूर शहीदों की अमरकथाओं पर आधारित कॉमिक्स

प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001,
मो. 9540040339

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह